(2) भूमि-प्रदूषण अथवा मिट्टी प्रदूषण
(Land Pollution or Soil Pollution)

भूमि, पर्यावरण का महत्त्वपूर्ण पक्ष है। यह भोजन, वनस्पति, प्राकृतिक स्रोतों का प्रमुख साधन है। यह मानवीय संस्कृतिक के विकास का भी आधार है। भूमि के भी कई पक्ष मिट्टी का स्वरूप, आर्द्रता, आकृति तथा क्षैतिजक पक्ष होते हैं। जब मिट्टी से अधिक रासायनिक पदार्थों, खादों व कीटनाशक दवाओं का उपयोग होने से भूमि-प्रदूषण होता है।

"The contamination of soil with excess of chemicals, fertilizers, insecticides, herbicides is known or soil pollution."

मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट प्राकृतिक स्रोतों तथा मानवीय क्रियाओं से होती है। दोनों से प्रदूषण तथा विघटन होता है। मिट्टी-प्रदूषण भूमिक्षरण से होते हैं! इससे मिट्टी उर्वरा-शक्ति कम हो जाती है, आर्द्रता तथा ह्यूमस पदार्थ कम हो जाता है और तापमान में उतार-चढ़ाव अधिक रहता है।

Scanned by TapScanner

भूमि-प्रदूषण के स्रोत (Source of Soil Pollution)

भूमि-प्रदूषण का मुख्य स्रोत जनसंख्या की वृद्धि है। इस कारण भूमि का सही ढंग से उपयोग नहीं किया जाता है, क्योंकि कृषि-योग्य भूमि पर दबाव निरन्तर बढ़ रहा है, शहरी क्षेत्रों की उपजाऊ भूमि पर आवास के निर्माण कार्य, कारखाने आदि बनते जा रहे हैं। भूमि को दुरुपयोग का संक्षिप्त विवरण दिया गया है—

1. प्रति वर्ष लाखों हेक्टेयर भूमि से ऊपरी सतह नहीं तथा वर्षा के जल अथवा बाढ़ से बह जाती है।
2. जल और वायु से भूमि-क्षरण लगातार हो रहा है।
3. रसायनिक खादों तथा कीटाणुनाशक दवाइयों से भूमि-प्रदूषित हो रही है।
4. भूमि का एक बहुत अन्य कार्यों में प्रयोग हो रहा है जैसे मकानों के लिए ईंटों के बनाने में मिट्टी का उपयोग।
5. मवेशी तथा अन्य जानवरों द्वारा चराने हेतु भूमि क्षेत्र में चारागाहों का विकास।
6. बढ़ती जनसंख्या के कारण सड़कें, विविध आवासीय कॉलोनियाँ, जनहित हेतु अस्पताल, पोस्ट ऑफिस अथवा अन्य विभागों हेतु भवन निर्माण।
7. सुविधा हेतु एअरपोर्ट, बस अड्डे अथवा अन्य संचार कार्यों हेतु भूमि का आवंटन।
8. खनन कार्य हेतु पट्टों का वितरण।

भूमि तथा जल प्रदूषण स्रोत सामान्यत: एक ही होते है तथा वायु-प्रदूषण भी भूमि-प्रदूषण के लिए उत्तरदायी होता है। इन सभी का स्रोतों को पाँच वर्गों में विभाजित किया है—

(1) भौतिक स्रोत—इसमें बाढ़ ज्वालामुखी विस्फोट तथा भूमि क्षरण प्रमुख हैं।

(2) जैविक स्रोत—इसमें सूक्ष्म माइक्रो जीव, बैक्टीरिया तथा प्रोटोजोआ के कारण प्रदूषण होता है।

(3) वायु से उत्पन्न स्रोत—औद्योगिक क्षेत्रों, कारखानों, शक्ति उत्पादक संयंत्रों के अपशिष्ट से तथा गर्म जल से भी भूमि-प्रदूषण होता है।

(4) वायोसाइड स्रोत—यह रासायनिक खादों के अधिक प्रयोग से मिट्टी की उर्वराशक्ति क्षीण हो जाती है। जैविक फासफेट पदार्थों को भी नष्ट करते हैं।

(5) नगरी एवं औद्योगिक अपशिष्ट—से मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट आती है, सीवेज के प्रदूषण मिट्टी को भी प्रभावित करते हैं।

भूमि-प्रदूषण का प्रभाव (The Effects of Soil Pollution)

भूमि प्रदूषण का मानव जाति, पशुओं तथा पौधों पर दुष्प्रभाव होता है और मिट्टी की गुणवत्ता का विघटन होता है। कृषि की उपज भी कम होने लगती है। भूमिक्षरण से भूमि बेकार क्षेत्र में बदल जाती है। रासायनिक खादों तथा कीटनाशक दवाओं से अनेक बीमारियाँ फैलती हैं। जिसके कारण मृत्यु भी हो जाती है।

भूमि-प्रदूषण का नियन्त्रण (Control of Soil Pollution)

मनुष्य, पशुओं तथा वनस्पति भूमि की गुणवत्ता पर निर्भर होती है। इसलिए भूमि प्रदूषण को रोकना तथा नियन्त्रण करना आवश्यक है। मनुष्यों तथा पशुओं को आवश्यक वस्तुयें भूमि से ही प्राप्त होती हैं। इसलिए भूमि की गुणवत्ता को बनाये रखना नितान्त आवश्यक है। भूमि-प्रदूषण को नियन्त्रण हेतु सुझाव इस प्रकार हैं—

1. भूमिरक्षण को नियन्त्रण करने व साधनों का उपयोग किया जाय।
2. कृषि में रासायनिक खादों तथा कीटनाशक दवाओं का उपयोग कम किया जाए, समुचित मात्रा में ही उपयोग किया जाए।
3. डी.डी.टी. का उपयोग सीमित किया जाए।

Scanned by TapScanner

4. नगरीय तथा औद्योगिक अपशिष्ट का समुचित उपचार के बाद में प्रवाहित किया जाए।
5. समुचित भूमि का उपयोग 'फसल प्रबन्धन' के अनुसार किया जाए।
6. किसानों को भूमि-प्रदूषण की जानकारी भी देना चाहिए जिससे रासायनिक पदार्थों का उपयोग कृषि में सावधानी कर सके।

Scanned by TapScanner